रात्रिक्लास 18-4-68 (113) ओ.शान्ता

सर्विस-समाचार आना है तो सर्विस देहली के म्युज़ियम का। और कहां म्युज़ियम बनाना है कलकत्ते में बना न है दूसरा जयपुर में है। जयपुर और देहली के सर्विस में रात-दिनका फर्क है। वहां एम0पी0 आदि बड़े2 लोग आते हैं। एम0पी0 शब्द देहली में है। देहली में म्युज़ियम के कारण सर्विस जल्दी है। देहली में कोशिश करते हैं परन्तु ऐसी जगह मिलती नहीं है। जबतक रजोरो का फैसला न हो तबतक कहां म्युज़ियम बनाना सके। कहां किराया पर मिल जाये तो अच्छा है। भक्ति मार्ग से ज्ञान मार्गवालों को युध करना है तो सेना भी चाहिए। अभी तो क्वाटर एसेन्ट भी नहीं हैं। एक तरफ है सारी दुनियादूसरे तरफ तुम कितने थोड़े हो। प्रभाव तब प्रेम निकलेंगे जब बच्चे और आयेंगे। बच्चों में सर्विस का जोश नहीं है। आज जोश भरता है कल ठंढा हो जाता है। इस मैचिन भी पड़ते हैं। पवित्रता की बात पर झगड़ा चलता है। क्वाटर में भी मकान नहीं मिलता। उनको भी ख्याल है यह रेपिटाती है। अभी घर तो फिटना ही है। स्त्री-पुरुष का झगड़ा, कन्याओं मां का झगड़ा, बेटा बाप का झगड़ा। सिर्फ इसी बात पर। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। इनको जीतने से जगत जीत बनेंगे। बस तो यह ही धरणा है। अभी है भी बहुत सहज बात। पर किसकी बुद्धि में नहीं बैठता। कहेंगे पत्थर बुद्धि है। जबतक ईश्वरीय बुद्धि बने दैवी संस्कार हो। खान-पान शुद्ध हो। आजकल आदमी बहुत ही कड़ी होता है मनुष्यों में। बीड़ी सिगरेट तो छोटे बच्चे केमुंह में देंगे। यहां तो सभी छोड़ना है। गायन है ना अन्त काल जो स्त्री लिपटे। वह बल बलतेश्यामं लिम्पट। इस समझना भी डिफिकल्ट लगता है। इसको कहा जाता है 100% पतित। नई दुनिया में है 100% पावन। इसमें साहस चाहिए। हठयोग की कितनी मेहनत करते हैं। वह भी इजी है। उनको माया रावण का सामना नहीं करना पड़ता है। तुमको तो सामना करना पड़ता है। बाबा रास्ता तो बहुत ही सहज बताते हैं। कहते हैं बच्चे अभी तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। दैवीगुण भी चाहिए। शान्ति भी चाहिए। कोई क्रोध करे ईंटल बोले तो कान को पट्टी बांध दो। इतनी ताकत कोई विरले में है। क्रोध वाले की सिकल जैसे टामी जैसे हो जाती है। क्रोध का भी भूत है। फिर भी मेहनत करते करते स्थापना तो ही हो जानी है। ऐसे भी है जो नर्क या पुरानी दुनिया समझते ही नहीं हैं। इसलिए कहा था लिखो ऊपर में जो सृष्टि के चक्र को नहीं जानते हैं वह फर्स्ट क्लास डीक्यट। कहां लिखते हैं कहां भूल जाते हैं। मायापीछा बल है। बाप भी कहते हैं मैं जब आता हूं तो अपना परिचय देता हूं। कहता हूं मैं स्वर्ग की स्थापना करने आता हूं। तो भी इस निश्चय में नहीं बैठ सकते। राजधानी बनेगी जाता है तो जरूर ऐसे होगा। कोई आश्चर्य करेंगे कोई कहेंगे कोई कहेंगे। ऐसी चलन होती है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो तो मेहनत करती चढ़ती कला। देह अभिमान न हो। तुम्हारे लिए हो अपने को आत्मा समझो परमात्मा को याद करो। कोई मित्र-सम्बन्धी होते भी परमपिता परमात्मा को याद करते हो। वह है परमआत्मा। उनका नाम सिर्फ शिव रखा हुआ है। अभी उनकीमत पर चलना है। उस आत्मा का नाम ही है शिव। बाबा आपको कितनी तकलीफों से छुड़ाते हैं। कितना फालतू खर्चा होता है। सभी पैसे खलास हो गये हैं। ज्ञान से आबादी ही होते हैं। पदमभाग्यशाली बनते हैं। औरसदा सुहागिन। स्त्री सदा सुहागिन तो पुरुष पुरुष तो अन्डरस्टुड ही हैं। वह तो है ही अमर पुरी में रहने वाले काल पर जीत पाते हैं। वहां तो काल होता नहीं। रावण ही नहीं। तुम फूल बनने हो। फूलों की वेराईटी जरूर होती है। देहली में मोगल गार्डन मशहुर है। तुम हो अहिंसक। योगबल से अहिंसा परमोधर्म की स्थापना करते हो। यह सभी हिंसा करते हैं विकार में जाते हैं। वह अहिंसक हैं। विकार में नहीं जाते। बच्चों को तो बहुत मेहनत करनी पड़ती है। बाबा भी समझ सकते हैं। इस समय देहली में म्युज़ियम में सब से जल्दी सर्विस है। इसलिए बाबा कहते हैं और भी खोलो तो बहुत आयेंगे। अखबार मत पर भी बहुत चल पड़ते हैं। फिर एक एक से मेहनत करनी पड़ती है। तब ही बुद्धि ठीक होती है। तुम कितने थोड़े हो। और जीत पाते हो। बाकी सभी विनाश हो जाते हैं। तुम बच्चों को अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए। मिरवा मौत मलुका शिकार। तुम कब हिलते नहीं हो। डर की बात भी नहीं। अच्छा गुडनाईट।

::-ओमशान्ति::-